4. कस्मात् किं शिक्षेत (किससे क्या सीखें)

पं. प्रभूतमल्पं .....प्रकीर्त्तितम्

सिंहस्य किं कार्यं प्रसिद्धम्? बृहत् कार्यं वा स्यात् अल्पं वा, सः पूर्णोत्साहेन करोति। तस्य उत्साहः प्रशंसनीयः। कर्तुमिच्छति-करना चाहता है। सर्वारम्भेण तत् कुर्यात्–उसको पूरे उत्साह से करना चाहिए, सिंहस्य एकः गुणः प्रसिद्धः।

बकः सर्वेन्द्रियाणि... साधयेत्

बकः सर्वाणि इन्द्रियाणि संयम्य आक्रमणं करोति, एवं नरः पूर्णेन एकाग्रेन चित्तेन समयस्य स्थानस्य अनुरूपं सर्वाणि कार्याणि साधयेत्। पूर्ण एकाग्रचित्त होकर कार्य करना चाहिए। बगुला यही शिक्षा देता है।

श्वा बह्वाशी... शुनः गुणाः

शुनः षड् गुणाः–बहु+आशीः अधिक खाने वाला। स्वल्पसंतुष्टः–थोड़ी सुविधाओं से ही संतुष्ट, सुनिद्रः–शीघ्र सो जाने वाला, शीघ्रचेतनः-शीघ्र जाग जाने वाला। प्रभुभक्तः स्वामी भक्त और शूर बहादुर, ये छः गुण कुत्ते के जानने चाहिएँ।

गर्दभः अविश्रमं.....गर्दभात्

गर्दभात् त्रीणि शिक्षेत–गधे से तीन बातें सीखें–बिना विश्राम के भार ढोना, गर्मी सर्दी की परवाह न करना, सदा संतुष्ट रहना।

कुक्कुटः युद्धं: .....कुक्कुटात्

चतुः शिक्षेत् कुक्कुटात्, चार बातें मुर्गे से सीखें। युद्ध करना, प्रातः उठना, बन्धुओं के साथ मिलकर भोजन, और आपत्तिग्रस्त पत्नी की रक्षा।

भ्रमरः अणुभ्यः.... षट्पदः

कुशलः नरः–कुशल व्यक्ति, अणुभ्यः छोटे, महद्भ्यः बड़े, शास्त्रेभ्यः शास्त्रों से, सर्वतः- सब ओर से, सारम् सार को आदद्यात्–ग्रहण करे जैसे भौंरा पुष्पेभ्यः फूलों से सार लेता है।

भूतैः–क्षितेर्व्रतम्

भूतैः–प्राणियों के द्वारा, दैववशानुगतैः-भाग्य के अधीन आक्रान्त होने पर भी, पृथ्वी अपना मार्ग नहीं छोड़ती। इसी प्रकार मनुष्य विपत्तियों से आक्रान्त होने पर भी अपने कर्त्तव्य पथ से पीछे न हटें विद्वान् मार्ग से विचलित न होवे। अन्वशिक्षम्–(मैंने सीखा) क्षितेः- पृथ्वी से यह व्रत।

चन्दनवृक्षः यद्यपि .....सन्तापमपहरति

यद्यपि चन्दन का विटप-वृक्ष फलकुसुमविवर्जितः फल और कुसुम से रहित, विहितः- कर दिया गया। निजवपुषा- अपने शरीर से ही, परेषां-दूसरों के, सन्तापम्-कष्टों को, अपहरति-हरता है। चाहे मनुष्य के पास धन सम्पत्ति न भी हो, वह अपने शरीर से ही दूसरों के कष्ट हर सकता है। सेवा से पुण्य मिलता है।

वृक्षाः छायाम्... सत्पुरुषाः इव

अन्यस्य छायां कुर्वन्ति–अन्य पर छाया करते हैं। स्वयम् आतपे-धूप में तिष्ठन्ति– खड़े रहते हैं। फलानि–फल अपि– भी परार्थाय–दूसरों के लिए अर्पित हैं। वृक्ष सत्पुरुषों के समान हैं।

क्रियापदानि

लट्	**विधि**	**लङ्**
इच्छति-चाहता है	कुर्यात्- करे, साधयेत्- सिद्ध करे	अन्वशिक्षम्- मैंने सीखा
अपहरति- दूर करता है		
कुर्वन्ति (बहु. व.) करते हैं,	वहेत्- वहन करे, शिक्षेत- सीखने चाहिएँ	
तिष्ठन्ति (बहु वचन) खड़े रहते हैं	रक्षेत्- रक्षा करे, आदद्यात्- ग्रहण करे, चलेत्- चले/विचलित होवे	

अव्ययपदानि

वा (अथवा) च (और) न (नहीं) नित्यं (सर्वदा) प्रातः (सवेरे) सह (साथ) सर्वतः-(सब ओर से-तसिल् प्रत्यय), इव (समान), अपि (भी), तथापि- (फिर भी। अपि-(भी)

प्रश्नाः

पूरयत **गुणः** **कस्मात् – शिक्षेत्**

I यथा उत्साहपूर्वकम् कार्यम् **सिंहात्**

(i)	इन्द्रियसंयमेन कार्यम्	-----	(v)	सर्वतः सारग्रहणम्	-----
(ii)	प्रभुभक्तिः	-----	(vi)	व्रतपालनम्	-----
(iii)	निरन्तरं भारवहनम्	-----	(vii)	स्वशरीरेण परोपकारः	-----
(iv)	बन्धुभिः सह भोजनम्	-----	(viii)	सर्वस्वम् एव परेभ्यः अर्पणम्	-----

II अत्र पशूनां समक्षं मञ्जूषात तेषां गुणान् लिखत

	पशुपक्षिणः	**गुणाः**		**पशुपक्षिणः**	**गुणाः**
(i)	भ्रमरः	----	(iv)	गर्दभः	----
(ii)	सिंहः	----	(v)	चन्दनवृक्षः	----
(iii)	क्षितिः	----	(vi)	कुक्कुटः	----

मञ्जूषा

गुणाः–सूर्यं परितः भ्रमणम्, अविश्रमं भारवहनम्, उत्साहपूर्वकं कार्यम्, सारग्रहणम्, स्वशरीरेण एव परोपकारः, प्रातः उत्थानम्।